आत्मचरित::जीवनसंघर्ष:: जीवनज्योत

डॉ.गीता संतोषयादव
एसोसियेटनवम्बर २०२३
भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
शिमला

हिन्दी साहित्य विधा में उपन्यास, कहानी,निबंध,रेखाचित्र,यात्रा-वृत्तांत,रिपोर्ताज, संस्मरण,आत्मकथा,जीवनीआदि महत्वपूर्ण विधायें हैं | कई दिनों सेहिंदी साहित्य में एक नयी विधा के शोध की आवश्यकता थी| २१सदी के दूसरेदशकमेंहिंदीसाहित्यमें एक नयी परंपरा की शुरुवात हुई है जो कि आत्मकथा और जीवनी साहित्यका मिश्रण है|जिसेमैंआत्मचरित नाम से संबोधित करना चाहूँगी|क्यूंकि मेरा मानना है कि भारतीय समाज की भारतीयता को बनाये रखने के लिए स्त्री- पुरूष-हिजड़ा समाज की महती भूमिका है |

आत्मकथा परिभाषा: किसी लेखक द्वारा अपने ही जीवन का चित्रण करने वाली कथा को आत्मकथा कहते हैं| जिसे अंग्रेज़ी में Autobiography कहते हैं|

जीवनी परिभाषा :किसी व्यक्ति के जीवन का चरित्र- चित्रण करना अर्थात किसी व्यक्ति विशेष के सम्पूर्ण जीवन वृत्तान्त को शब्दबद्ध करना जीवनी कह लाता है |जिसे अंग्रेज़ी में Biography कहते हैं |

आत्मचरित:किसी लेखक या लेखकों द्वारा दूसरे व्यक्ति के जीवन कथाकाचित्रणअत्मकथात्मक शैली में करने वाली विधा को आत्मचरित कहेंगे|---डॉ.गीता यादव

उदाहरण स्वरुप श्रीराम के जीवन चरित का उद्घघाटनगोस्वामी तुलसी ने रामचरित मानस में किया है| उसी प्रकार वर्तमान स मयमेंकिन्नर साहित्य की दो पुस्तकें सामने आई

हैं|जिसे आत्मकथा का दर्जा दिया जा रहा है| **"मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी"** तथा**"पुरूष तन में फँसा मेरा नारी मन"** इसी विधाके अंतर्गत आनेवाल दो महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं| इन आत्मकथाओं के लेखकोंकी स्वयं अनुभूति तो है किन्तु इसे शब्दांकन करने का काम अन्य लेखकों ने किया है| इसलिए मेरे मतानुसार इस शैली में लिखित रचनाओं की गणना आत्मचरित विधा के अंदर की जानी चाहिए| जो सर्वथा एक स्वतंत्र विधा के रूप में हिन्दी साहित्य में उल्लेखित होनी चाहिये|

"मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी"पहला किन्नरआत्मचरित के रूप में माना जा सकता है **|"पुरूष तन में फँसा मेरा नारी मन"** दूसराकिन्नरआत्मचरितमाना जाना चाहिए | किन्तुइस पुस्तक के मुखपृष्ठ पर छपा है **"कॉलेज प्रिंसिपल के पद तक पहुँचने वाले पहले ट्रांसजेंडर की बेबाक आत्मकथा"** जो **मानोबी बंदोपाध्याय** की आत्मकथा है, जिसका शब्दांकन **'झिमली मुखर्जी पांडे'** ने किया|वे लिखती हैं "मैं मनोबी दी का आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने अपने जीवन की कहानी कहने का मुझपर भरोसा किया, वे मेरा हाँथ थामकर जीवन की उन गहराईयों में ले गयीं जिसमें संभवता वे किसी को झांकने तक नहीं देती |१इसी प्रकार **"मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी"**पुस्तक का शब्दांकन **डॉवैशाली रोड़े**जीने किया है| इसपुस्तक का कथन -**"कोईसन्दर्भ लक्ष्मी को याद नहीं रहा तो सब एक साथ बैठकर स्मरण-शक्तिपूराजोर डालते थे|फिर उनसे बनता था वो प्रसंग.."**२

अस्तु,कह सकते हैं कि, इनपुस्तकोंमें लिखे गए ये कथन यह बतलाते हैं कि ,ये रचनाएँ आत्मकथाविधा में पूरी तरह से योग्य नहीं बैठती|इसके लिए एक स्वतंत्र विधा की आवश्यकता है|अस्तु,मैं इसके लिए **"आत्मचरित"** विधा नाम का सुझाव देना चाहती हूँ |

प्रथम आत्मचरित के रूप में **"गोस्वामीतुलसीदास"** कृत **"रामचरित मानस"** का नाम लिया जा सकता है|इस प्रकार की रचनाओं को आत्मकथा से भिन्न एक स्वतंत्र शाखा के रूप में रखना आधिक उचित होगा |हिजड़ा समुदाय की आत्मकथाओं ने उनके जीवन के अभेद्य किले को ढाहकर हाशिये पर जीने के लिए विवश इस समुदाय को मुख्यधारा में स्थान दिलवाने की पहल की है। साहित्य की गद्य विधाओं में आत्मकथा को सबसे अधिक

विश्वसनीय और प्रामाणिक विधा के रूप में स्वीकार किया जाता है क्योंकि अन्य विधाओं में यथार्थ के साथ कल्पना का भी मिश्रण होता है लेकिन आत्म चरित में लेखक अपने जीवन की छोटी-छोटी घटनाओं को पूरी ईमानदारी के साथ चित्रित करता है जिससे कहानी में प्रमाणिकता बनी रहती है। अपनी आत्म चरित में लेखक अपने परिवेश के सामाजिक , पारिवारिक तानेबाने को खंगालते हुए अपने जीवन संघर्षों को दर्ज करता है और पाठकों को साहस और धैर्य बनाए रखने के प्रेरणा देता है। आत्म चरितका लेखक साधारण से लेकर नामचीन व्यक्ति तक कोई भी हो सकता है। अस्मितावादी विमर्श के दौर में हाशिये पर स्थित वंचित समुदायों ने वर्चस्ववादी पुरूष प्रधान व्यवस्था के खिलाफ आवाज़ उठाने का जो साहस जुटाया है उसकी प्रतिध्वनि उनकी आत्म चरित में सुनी जा सकती है। इस आधार पर कहा जा सकता है किन्नरआत्मचरित किन्नर समुदाय के जीवन के अंधेरे कोनों को पूरी प्रमाणिकता के साथ प्रकाश में लाने का सशक्त माध्यम बन सकती है|चूँकि मैंने यहाँ विश्लेषण के लिए किन्नर आत्मचरित लिए हैं किन्तु,यह दलित आत्मचरित,आदिवासी आत्मचरित,स्त्री –आत्मचरित,पुरूष –आत्मचरित किसी भी विधा में हो सकता है |

साहित्य में किन्नरविमर्श के आने के बाद इनके जीवन से जुड़े रहस्य खुलने लगे हैं। यह सुखद है कि इस समुदाय को लेकर अब चर्चा होने लगी है क्योंकि घृणा और उपेक्षा का सामना करते हिजड़ा या किन्नर समुदाय समाज और नीति निर्माताओं की सोच की परिधि में आते ही नहीं थे। भारतीय समाज में आजतक स्त्री ,पुरुष के अलावा किन्नरसमुदाय को सामाजिक स्वीकृति दी ही नहीं गई और न ही इस वर्ग को हाशिये पर स्थित दलित,आदिवासी और स्त्री के समान उत्पीड़ित वर्ग में शामिल किया गया। इसलिए हिजड़ा या किन्नर समुदाय को सामाजिक समानता के अधिकार दिलाने के लिए जनजागरण अभियान के साथ इनके जीवन पर आधारित साहित्य पर बात करना जरूरी है।

हिजड़ा शब्द के लिए स्वयं लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी जी मानती हैं कि, हिजड़ा मूल उर्दू शब्द है| वह भी “हिजर” इस अरेबिक शब्द से आया हुआ है| हिजर’यानी अपना समुदाय

छोड़ा हुआ ,इस समुदाय से बाहर निकला हुआ|मतलब स्त्री- पुरूषों के हमेशा के समाज से बाहर निकलकर स्वतंत्र समाज बना के रहनेवाला। ये अर्थ इस शब्द में भी समाया हुआ है । हमारेपूरे देश में हिजड़ा समाज है और अलग-अलग भाषाओँ में उसके लिए अलग-अलग शब्द हैं। अलग-अलग राज्यों के हिसाब से उनका इतिहास,संस्कृति भी जरा अलग-अलग है।

उर्दू और हिन्दी में 'हिजड़ा' शब्द है| इसके साथ ही उर्दू में "ख्वाजासराय" भी कहा जाता है|हिजड़ों को | अपने प्राचीन ग्रंथो में "किन्नर"शब्द की संकल्पना है|

इस वजहसे हिजड़ो को हिंदी में'किन्नर' भी कहते हैं| मराठीमें'हिजड़ा' और'छक्का' ये दो शब्द प्रचलित हैं। गुजरातीमेंउन्हें 'पावैया' कहते हैं तो पंजाबीमें'खुस्रा' या'जनखा' । तेलुगु में'नपुंशकुडु', 'कोज्जा', 'मादा' कहा जाता है, तो तमिल में 'शिरुरनान गाई', 'अली', 'अरवन्नी', 'अरवानी', 'अरुवनी' शब्द इस्तेमाल किये जाते हैं।

किसीभीभाषामें चाहे जोकहके बुलाएँ, तोभी'हिजड़ा' संकल्पनाथोड़े –सेफ़र्क से वही है। 'हिजड़ा' पुरूष के रूप में जन्म लेता है । बचपनसे पुरुष के रूप में ही बड़ा होता है... लेकिन मूल रूप से ही उसकी लैंगिकता अलग होती है। बड़ा होते – होते वो स्त्री की भूमिका अपनाने लगताहै । उसका दिखना, वर्ताव करना, चाल – ढाल, हाव-भाव सभी लडकियों कि तरह होने लगता हैं| उसे खुद भी उसका एहसास होने लगता है। लेकिन समाज की नज़र में ये बातें खलने लगती हैं और लोग उसे चिढ़ाने लगते हैं ।वो बील्कुल नासमझहोतेहैं ऐसा नहीं है ; और बहुत कुछ समझ में आता है, ऐसा भी नहीं है। ऐसीकच्ची उम्र के ये लड़के फिर उलझन में आ जाते हैं । अकेले रहने लगते हैं ।"मैं कौन हूँ"इस सवाल का जबाब हर तरह से खोजते रहते हैं और फिर 'मैं औरत हूँ'ऐसा तय करके औरतों के जैसे ही यानी हिजड़ा बनते हैं |

इनके जीवन संघर्षों के शुरुआती लेखन के अंतर्गत अब तक मात्र दोआत्म चरितहिन्दी में अनुवादित होकर प्रकाशित हुई हैं। पहली है लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी की आत्मकथा- **मैं हिजड़ा, मैं लक्ष्मी ,**(२०१५)दूसरी साल 2017 में **मानोबी बंदोपाध्याय** की आत्मकथा **'ए गिफ्ट ऑफ़ गॉडेस लक्ष्मी'** का हिन्दी अनुवाद, **'पुरूष तन में फंसा मेरा नारी मन** के नाम से प्रकाशित हुई। यह पुस्तक एक किन्नरमहिला की अपनी पहचान को परिभाषित करने और उपलब्धि के नए मानकों को निर्धारित करने वाली असाधारण और साहसिक आत्मचरितकही जा सकती है। मानोबी के शब्दों में , "मुझे सारा जीवन लोगों के मुख से हिजड़ा, बृहन्नला ,नपुंसक, खोजा, लौंडा' जैसे शब्द सुनने पड़े हैं और मैंने जीवन के इतने वर्ष यह जानते हुए बिताए हैं कि मैं एक जातिच्युत और परित्यक्त हूं। क्या इसमें मुझे पीड़ा का अनुभव हुआ? हुआ और इसने मुझे बुरी तरह से आहत किया है लेकिन चलन से बाहर हो चुके मुहावरे का प्रयोग करें तो कह सकते है कि समय बड़े-बड़े घाव भर देता है। मेरे मामले में इस कहावत ने थोड़ा अलग तरह से अपना प्रभाव दिखाया है। कष्ट तो अब भी है पर समय के साथ-साथ दर्द घट गया है। यह मेरे जीवन के एकांत क्षणों में मुझे आ घेरता है , जब मैं अपने अस्तित्व संबंधी यथार्थ से जूझ रही होती हूं। मैं कौन हूं और मैं एक पुरूष की देह में कैद स्त्री के रूप में क्यों जन्मी ? मानोबी की आत्मकथा में एक किन्नर महिला के भीतरी द्वंद्व और उसके खंडित व्यक्तित्व के दंश को साफ-साफ देखा जा सकता है। सामाजिक अस्वीकृति के दंश को लगातार झेलते हुए सोमनाथ से मानोबी बनाने का सफर आसान नहीं था। कारण पुरूष शरीर पुरुषतत्व के कारण ही तो समाज की प्रतिष्ठा का हकदार होता है |लेकिन सोमनाथ का दैहिक गठन से भले ही पुरूष था लेकिन मन और भावनाएं तो स्त्रीत्व के गुणों से आच्छादित थीं। ऐसे पितृसतात्मक समाज से मुठभेड़ करते हुए सोमनाथ के लिए पुरुष से एक किन्नर महिला बनने का सफर बेहद त्रासद और संघर्षपूर्ण रहा। परिवार और समाज के

बीच रहकर भी मानोबी अपने अस्तित्व की लड़ाई में एकदम अकेली थी। मानोबी का जन्म संभ्रांत परिवार में हुआ था। उसकी शारीरिक और मानसिक संरचना सामान्य बच्चों की तरह ही थी लेकिन धीरे-धीरे बढ़ती उम्र के साथ अपने भीतर और बाहर के असंतुलन को महसूस करने के कारण उसके समक्ष अपनी पहचान का संकट उत्पन्न होता है कारण जन्म से लैंगिक पहचान पुरूष के रूप में थी लेकिन मन से वह स्वयं को स्त्री मानती थी। तन और मन का संघर्ष लंबे समय तक चलता रहा। लोग क्या कहेंगे, परिवार की बदनामी होगी, जैसे विचारों से लड़ते-लड़ते आखिरकार एक दिन सबके सामने पुरुष का चोला उतारकर स्त्री के रूप में अपनी पहचान उजागर करने का जोखिम उठाती है और अपने भीतरी संघर्ष से मुक्त हो जाती है। यहां से शुरू होता है एक ट्रांसजेंडर की पहचान का सामाजिक संघर्ष।जेंडर का प्रश्न अस्मिता के प्रश्न के भीतर से ही उभरता है। जेंडर का संबंध एक ओर पहचान से है तो दूसरी ओर सामाजिक विकास की प्रक्रिया के तहत स्त्री-पुरूष की भूमिका से है। पारंपरिक पहचान से अलग प्रजनन क्षमता के न होने के कारण समाज में इनकी भूमिका शून्य मान ली जाती है। लेकिन आज मेडिकल साइंस की प्रगाति के साथ किन्नरसमुदाय अब आत्मचेतस हुआ है और आज सामाजिक पूर्वाग्रहों को तोड़कर अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहा है। आत्मचरित की शुरुआत सोमनाथ उर्फ मानोबी के जन्म से होती है। दो लड़कियों के बाद सोमनाथ का जन्म बंदोपाध्याय परिवार में हुआ था। पुत्र के रूप में खानदान का वारिस पाकर उनके पिता बेहद खुश थे। लेकिन पिता की खुशी पर मानो धीरे-धीरे ग्रहण लग रहा था क्योंकि सोमनाथ सामान्य लड़कों से अलग व्यवहार करता दिखाई देता। उधर सोमनाथ भी अपने अधूरेपन को सबके समक्ष न कह पाने की घुटन बचपन से ही महसूस करने लगा था। अपने पुरुष शरीर में स्त्री मन को कैद देख भीतर और बाहर की पीड़ा से व्यथित रहने लगा। वे लिखते हैं-**"मैं बहुत भ्रमित थी मेरा जीवन एक अंतहीन भूल-भुलैया बन गया था। हर बार मैं एक ही मोड़ पर आ जाती मैं कौन थी ? मेरी देह मेरी आत्मा से अलग क्यों थी या मुझे अपनी पहचान को जानने में भूल हो रही थी? मेरा जन्म इस तरह क्यों हुआ? मैं जितने लोगों को जानती थी**

उनमें से अधिकतर का यही मानना था कि मैं एक होमोसेक्सुअल यानी समलैंगिक थी। उन्होंने मुझे एक जनाना लड़का बना दिया था जो हिजड़ा बनने की तैयारी में था।मैं पूरीतरह निश्चिंत थी कि मैं होमोसेक्सुअल नहीं, एक लड़की हूं। मैं अपनी हमउम्र लड़कियों की तरह पुरुषों की ओर आकर्षित होती थी और उन्हें अपने साथी की तरह पाना चाहती थी पर विपरीतकामी लोगों की दुनियाने मेरे प्रवेश पर रोक लगा दी थी। उन्होंने केवल मेरा शोषण करते हुए मेरे स्तर का माखौल उड़ाया। उस समय जबट्रांसजेंडर शब्द लोगों के लिए अनजान था। जब हम छोटे थे तो मज़ाक मज़ाक में एक-दूसरे से पूछते, **तुम एक मेल हो फ़ीमेल हो या कैमल हो? मुझे लगा कि मैं इस कैमल श्रेणी से थी और मेरे आगे एक पूरी बदकिस्मत जिंदगी पड़ी थी पर मैं फिर भी अपने प्रश्नों के उत्तर चाहती थी।"**बुद्धि और शरीर से स्वस्थ सोमनाथ पढ़ने-लिखने में समान्य छात्रों की तुलना में मेधावी छात्र थे। पढ़ने में अच्छा होने के बाद भी सोमनाथ को विज्ञान के लिए किसी मार्गदर्शन की जरूरत थी जिसमें उसके स्कूल सीनियर **इन्द्र दा** ने उसकी बहुत मदद की। इन्द्र दा सोमनाथ के मन की उलझन को समझ रहे थे। भीतर चल रहे झंझावातों को समझने के लिए उनके कहने पर ही वह मनोचिकित्सक से मिला। उस डाक्टर ने सोमनाथ की कहानी धैर्य के साथ सुनी और समझाया की काउंसलिंग की मदद से वह अपने-आप को यकीन दिला सकेगा कि वह एक पुरुष की तरह जन्मा है और वह पुरूष ही है लेकिन वहां से आने के बाद सोमनाथ की सोच में कोई बदलाव नहीं आया। वह अभी भी स्वयं को लड़की मानता था। उसे अपने शरीर से घृणा होने लगी थी। एक बार फिर इन्द्र दा ने उसे **मैनाक मुखोपाध्याय** से मिलने को कहा। मैनाक ने उसे बताया की सोमनाथ अपने बारे में जो भी सोच रखता था वह कहीं से भी गलत नहीं थी। उन्होंने ही उसे बताया था कि वह **जेंडर अफर्मिंग** सर्जरी करवा सकते हैं पर इसके लिए ऑपरेशन से पहले और बाद में भी हार्मोनल उपचार की आवश्यकता होगी और इसके साथ ही काउंसलिंग भी जारी रखनी होगी ताकि मानोबी का देह और मस्तिष्क आने वाले परिवर्तनों के अनुकूल हो सकें।अपनी पहचान को लेकर मानोबी घर और बाहर निरंतर अपमान और तिरस्कार को झेलते हुए अपने वजूद के साथ दृढ़ता के साथ खड़ी थी। सामाजिक विडम्बना थी कि जो लोग

मानोबी के खंडित अस्तित्व को हेय दृष्टि से देख रहे थे वही लोग एकांत में इसका यौन शोषण करने से भी बाज नहीं आते थे। उनका अपना कज़िन हर रात शराब के नशे मे घरवालों को बेइज्जत करता और उसका यौन शोषण भी करता। सिर्फ इतना ही नहीं उसके मोहल्ले के ज़्यादातर लोगों ने उसकी मजबूरी का फायदा उठाकर उसका यौन शोषण किया था। "तब तक सोमनाथउर्फ मानोबी धीरे-धीरे पड़ोस के बहुत से लोगों के हाथों का सेक्स का खिलौना बन गई थी। कुछ लोग तो बाहर ले जाकर उसकेसाथ शारीरिक संबंध बनाने का साहस रखते तो कुछ केवल आस-पास से निकलते हुए उनके हालात की खिल्ली और मज़ाक उड़ा कर ही संतुष्ट हो लेते। लेकिन मानोबी सामान्य से भिन्न दिखाना चाहती थी , इसलिए उसने अपनी शिक्षा जारी रखते हुए कॉलेज में प्रवेश किया वहां भी अपने अस्तित्व को पूर्णता दिलाने के लिए अपनी पहचान और सम्मान के लिए उसे सबसे संघर्ष करना पड़ा। **"उन्हें लगा कि सोमनाथ बंधोपाध्याय नामक कोई युवक होगा और उन्हें अपनी कक्षा में मेरे जैसे छात्र के आने का कोई अंदेशा नहीं था।**उसके कुछ दोस्तों को लगा कि वह**ट्रांसवेस्टाइट**हैयानी उन्हेंविपरीत लिंगी के कपड़े पहनना पसंद है। उन्होंने सबको स्पष्ट शब्दों में जाता दिया कि वह एक औरत थी जो मर्द के जिस्म में कैद थी उस समय उन्हेंट्रांसजेंडर शब्द की कोई जानकारी नहीं थी।प्रेम पाने की चाहत में मानोबी ने प्रेम में अनगिनत धोखा खाने और हर बार छले जाने के बाद भी प्रेम करना नहीं छोड़ा। कॉलेज में अभि के साथ प्रेमप्रसंग और उसके माता-पिता के विरोध के बाद उससे अलग होने की पीड़ा उसके जीवन का दूसरा धोखा था। अभि के साथ सुखद पारिवारिक जीवन जीने का सपना अधूरा ही रह गया। **"प्रेम मेरे जीवन की सबसे बड़ी छलना रही फिर भी मैं प्रेम या प्रेम करने से नहीं हारी।**उन्हें लगता है कहीं न कहीं भावनिक तौर पर बहुत कमजोर होते हैं|मृगमारीचिका के समान उन्हें लगता है अब उनके प्रेम की परिणिति होगी लेकिन वास्तविक रूप में ऐसा कुछ होता नहीं | इसी प्रकार ये प्रेम के झाँसे में आते जाते हैं और इनका शोषण होता जाता है| जब भी उनके जीवन में आने वाले उन विविध प्रेम प्रसंगों का स्मरण किया जाता है तो एक गहरी हृदय विदारक आह! के सिवा कुछ सुनाई नहीं देता। प्रतेक अनुभव उनके दिल को ठेस पहुंचाती, उनकेवजूद

को चूर-चूर कियाजाता है | पर यह अपने साथ एक नई अनुभूति लेकर आता जो उन्हेंपहले से कहीं परिपक्व और आत्मविश्वासी बना जाता। आज उन्हें एहसास है कि प्रेम, जीवन की तरह ही, कुछ समय बाद समाप्त होता है और वह उन्हें छोड़ने आना चाहिए था,जो वह नहीं कर पाई। अपनी वेदना,छटपटाहट,घुटन से वह जीवन में एक ही गलती दोहराती आई और छले जाने की भावना से पीड़ित होती रही |अपनी खूबसूरती की वजह से वह अपने कॉलेज में सबके आकर्षण का केंद्र थी। घूमना फिरना , सेक्स करना उनकी दिनचर्या में शामिल था लेकिन उसके मन को तो एक स्थायी संबंध की तलाश थी जो उसकी आत्मा को उन्नत बना सके। वे कहती हैं-"मैं युवा और भावुक प्रकृति की थी और अपने लिए किसी मजबूत सहारे की तलाश में थी। कोई ऐसा जो उनकी निगाहों से होते हुए उनकी आत्मा की प्यास को बुझा देता। जो भी उनकी राह में आए वे उनके लिए ऐसा कोई एहसास नहीं रखते थे पर वे पूरी तरह से उन्हें दोष नहीं दे सकती क्योंकि वे कबूल करती हैं कि वे सबके साथ मौज मना रही थी और यह सब उनकी इच्छा से हो रहा था। वेजानती थी कि यह सब अच्छा नहीं था और उनकी जैसी अच्छी छात्रा को यह सब करना शोभा नहीं देता पर वे चाहकर भी अपनी अस्थायी रंगरेलियों से छुटकारा नहीं पा सकी।" आपनी गलतिओं को इस बेबाकी से स्वीकार करना आत्मचरित विधा को और भी सशक्त और मजबूत बनाता है |मानोबी के व्यक्तित्व का एक सकारात्मक पक्ष था उसका लेखन कौशल , जो उसे निरंतर सब संघर्षों से जूझने की प्रेरणा दे रहा था यही वजह थी कि मानोबी इन सबसे ऊपर उठकार पत्र-पत्रिकाओं के लिए स्वतंत्र लेखन करने लगी जिसने न सिर्फ उसे ख्याति दिलाई बल्कि कॉलेज में अब सब उसका सम्मान भी करने लगे। अखबार के लिए काम करते हुए उसके सहयोगियों ने उसे पूरा सम्मान दिया। यहाँ से मिले नए आत्मविश्वास और स्वाभिमान से सशक्त होकर उसने एक साहसिक कदम उठाया। अपने ट्रांसजेंडर होने की पहचान स्वीकार करते हुए सबके सामने आने का साहस किया लेकिन माता-पिता उसकी इस पहचान को झुठलाते रहे और सबसे यही कहते रहे कि सोमनाथ गलत संगत में पड़कर ऐसा कह रहा है। कॉलेज के बाद

यूनिवर्सिटी में दाखिला लेकर मानोबी ने एक नई दुनिया में कदम रखा। बौद्धिक आदान-प्रदान के द्वारा **शंख घोष सर** की प्रेरणा से उसने प्रोत्साहित होकर सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेकर जल्दी ही जेयू में लोकप्रिय छात्र के रूप में अपनी पहचान बना ली | लेकिन **प्रेम और सेक्स उसके जीवन की सबसे बड़ी कमजोरी थी** इसलिए यहां एक बार फिर सागर बोस के प्रेम मे पड़कर मानोबी छली जाती है। जब उसे यह पता चलता है कि सागर ने सिर्फ उससे ही नहीं कई दूसरे लोगों से भी शारीरिक संबंध है। इसके बाद वह कई विदेशी छात्रों के साथ भी दैहिक सबंध बनाती है लेकिन मन के भीतर का अकेलापन इनमें से कोई भी नहीं भर पाता। महिला मित्रों के साथ भावनात्मक बल लेते हुए एम .ए. करने के बाद उसे नौकरी की आवश्यकता थी जो उसे आत्मनिर्भर बना सके।शीध्र ही उ नकी ये इच्छा भी पूरी हो जाती है और **बगुला के श्री कृष्णा कॉलेज में १२५ रुपये प्रतिमाह** वेतन पर अंशकालिक लेक्चरार के रूप में उसकी नियुक्ति हो जाती है। कुछ दिनों बाद ही उसे स्कूल में स्थायी अध्यापक की नौकरी भी मिल जाती है। वहां अध्यापन के साथ-साथ डांस और थियेटर की स्थापना कर छात्रों के बीच उसकी लोकप्रियता बढ़ने लगती है। उसी स्कूल में अपने सहयोगी **बिमान** के **आकर्षणवश वह उससे** प्रेम करने लगती है बिमान भी उससे प्रेम करता है। दोनों विवाह के बाद एक परिवार बनाना चाहते थे चूंकि दोनों आर्थिक रूप से स्वतंत्र थे इसलिए लोग क्या कहेंगे उसकी चिंता दोनों को न थी। बिमान **मानोबी को पत्नी** बनाना चाहता था इसलिए वह उससे ऑपरेशन करवाने के लिए आग्रह कर रहा था। दोनों एक मनोचकित्सक से मिलने जाते हैं, दोनों से अलग-अलग बातचीत करते हुए डॉक्टर , बिमान को इस सबंध से दूर रहने की सलाह देता है इस बात की जानकारी मिलते ही मानोबी बिमान पर टूट पड़ती है उसे बिमान के चेहरे की उड़ी हुई हवाइयों से पता लग जाती है कि बिमान कितना कायर आदमी है और एक बार फिर वो अपने दिल के हाथों आहत होती है। इसी अवसाद के बीच उसे सर्विस कमीशन के द्वारा पश्चिम बंगाल के कॉलेज में प्रोफेसर पद के लिए नियुक्ति का पत्र प्राप्त होता है।

यहां से उसके जीवन की एक नई शुरुआत होती है। नए माहौल और नए वातावरण में चुनौतियां ज्यादा कठिन थी। इस कालेज के दो नेता टाईप **प्रोफेसर सूरी सेनगुप्ता और शशांकने** एक ट्रांसजेंडर को प्रोफेसर के रूप में स्वीकार करने से इनकार कर दिया था जबकि कॉलेज के प्रिंसिपल को इस राजनीति से कोई लेना-देना नही था। दोनों प्रोफेसर के अभद्र व्यवहार का आतंक दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा था जिसका जिक्र कराते हुए मानोबी लिखती हैं, **"एक बार उनमें से दो लोगों ने मुझे दीवार से सटाकर खड़ा कर दिया , मेरी छातियों के निप्पल इतनी ज़ोर से दबाए कि मेरी आह निकल गई। हिजड़े अपनी जुबान बंद रख।"** यहां वर्चस्ववादी पुरूषप्रधान चेहरा अपने क्रूर रूप में सामने आता है लेकिन अपने छात्रों के प्रति अपनी जिम्मेदारियों के एहसास के कारण सब कुछ चुपचाप सहने के लिए मजबूर मानोबी हिम्मत नहीं हारती। उसका मानना था कि एक किन्नर को **पहचान और सम्मान उसकी उच्च शिक्षा और आत्मनिर्भरता ही दिला सकती है।** इसलिए हमारी शिक्षा पद्धति में बदलाव की जरूरत को महसूस करते हुए मानोबी मानती है , **"एक समाज के रूप में हमें पारंपरिक उच्च शिक्षा के बारे में नए सिरे से विचार करना चाहिए।** इसकी बजाय अगर हम उन बच्चों को पेशेवर प्रशिक्षण दे सकें तो वे अपने जीवन में कोई काम कर सकेंगे और उन्हें बेरोजगार नहीं रहना होगा।"सामाजिक दायित्वों का निर्वाह मानोबी को आत्मिक संतोष देता था इसलिए मानोबी ने तय किया कि वह छोटी-मोटी बाधाओं से अपने उत्साह को मंद नहीं होने देगी और गांव के नवयुवकों और युवतियों से मित्रता कर समाज में लोगों की सहायता करेगी। इन सब घटनाक्रमों के बाद वह जीवन की एक ओर सीढ़ी चढ़ते हुए **पी.एच.डी** करने का निर्णय लेती है और गाइड के रूप में जेयू की प्रोफेसर और नोबल पुरस्कार **विजेता अमर्त्य सेन की भूतपूर्व पत्नी नवनीता देवसेन** को चुनती है। नवनीता ट्रांस समुदाय की समस्याओं और अधिकारों के लिए आवाज उठाती रहती थी। नवनीता मानोबी को इन्हीं के जीवन पर शोध करने के लिए प्रेरित भी करती है लेकिन उनकी दूसरी गाइड **शर्मीला दी** को यह विषय पसंद न आने की वजह से मानोबी इस विषय पर शोधकार्य नहीं कर पाती लेकिन व्यक्तिगत रूप से ट्रांस समुदाय के बारे में बारीकी से जानने और उनके

जीवन के अनदेखे पहलुओं को प्रकाश में लाने केउद्देश से वह भारत की पहली ट्रांसजेंडर पत्रिका **अबोमानाब** नाम की पत्रिका निकालने का निर्णय लेती है। अपने इस कार्य के लिए उसे उनके जीवन को निकट से देखने की जरूरत महसूस होती है और वह उस घराने कीदीक्षा लेने के लिए **स्यामोली दी** के आश्रम जाती हैं | इस पत्रिका के प्रकाशन के बाद मीडिया में मानोबी को कवरेज मिलने लगी नाम और शोहरत के साथ कॉलेज के विरोधियो के मुंह भी बंद हो गए लेकिन , वह अभी अपनी अपूर्णता के साथ जूझ रही थी जिसमें उसका साथ दियाएडोक्रिनोलोजिस्ट **अनिरबान मजूमदार** ने जिन्होंने अखबार में मानोबी का लेख पढ़कर उससे संपर्क किया । किन्नरप्रजाति में मानोबी उनका पहला केस थी। उनकी देखरेख में तीन वर्षों की थेरेपी के बाद उसके शारीरिक बनावट में बदलाव दिखने लगे थे। कमर , छाती ,पेट का आकार बदलने लगा था। अब अगला कदम था ऑपरेशन का जिसको लेकर पहले तो वह डगमगाई और एक साल के सोच विचार के बाद वह साल २००२में इस ऑपरेशन के लिए तैयार हुई जिसके पीछे उसके एक और प्रेमसबंध की महत्वपूर्ण भूमिका थी। इस बार के प्रेमी का नाम था सोरेन। सोरेन ने भी उसे छला है यह उसे बहुत देर बार पता चला लेकिन सोरेन के प्रेम में पागल मानोबी का मन ये मानने को तैयार ही नहीं था कि सोरेन ने भी उसे छला है। समय के साथ यह घाव भी भर जाता है। एकबार फिर वह अपने नए प्रेमी **अरिंदम** के प्रेम में पड़कर दांपत्य जीवन के सपने संजोने लगती है। पैसा शोहरत सब कुछ होने के बाद भी मानोबी अपने एकाकी जीवन में साथी के रूप में पति का प्रेम पाने के लिए तरस रही थी ,वे कहती हैं **"अब मेरे सामने जीवन का एक ही लक्ष्य था -विवाह ,पति और परिवार। बेशक मैं उस तरह औरत नहीं बन सकती थी जैसी कुदरत ने बनाई है , मुझे रक्त स्राव नहीं होगा और मैं न ही मां बन सकूंगी पर मेरे पास योनि और वक्षस्थल होगा , जो मेरी लैंगिकता को बढ़ाने में मदद करेगा।"**लेकिन इस संबंध में भी वह एक बार फिर धोखा खाती है। बार-बार प्रेम में छले जाने के बाद भी अपनी पहचान के साथ मजबूती से खड़े रहकर सोमनाथ सेक्स चेंज कराने के बाद कानूनी तौर पर अपना नाम बदलकर मानोबी रख लेती है। जिसका अर्थ

बताते हुए वह कहती हैं , **“मानोबी नाम मैंने इस लिए चुना क्योंकि इसका अर्थ है सर्वोत्कृष्ट मादा-प्रकृति -जैसा प्रकृति ने उसे बनाया है। उनके इस कथन में अपने अस्तित्व के प्रति सम्मान और स्वाभिमान पाने की ललक दिखाई देती है** वह किसी से भी स्वयं को कमतर नही आंकती वह ट्रांस समुदाय के संबंध में फैलीसामाजिक भ्रांतियों को दूर करना चाहती है। वह सिद्ध करना चाहती है कि भले ही वह प्राकृतिक रूप से प्रजनन नहीं कर सकती लेकिन वह गोद लेकर मातृत्व का बोध कर सकती है। अपने माता-पिता को इकलौते पुत्र होने का सुख नहीं दे सकी लेकिन अंतिम समय तक पिता को साथ रखकर संतान का सुख देकर अपनी जिम्मेदारियों को निभा सकती है।

सोमनाथ से मानोबी बनाने का सफर कृष्णनगर वीमन कालेज की प्रिंसिपल पद पर पहुंचकर पूरा होता है। इसके साथ ही समाज में सम्मान और आदर के साथ भारत की पहली किन्नर महिला प्रिंसिपल बनाने का गौरव मिलता है। तमाम विरोधों ,उपहासों और व्यंग्य को सहते हुए मनोबी पुरुष तन का चौला उतार स्त्री मन के साथ स्त्री-शरीर धारण करने में सफल होती है। कहा जा सकता है कि सफलता का मूल मंत्र था- दृढ़ निश्चय। अपने अटूट आत्मविश्वास और उच्च शिक्षा के बल पर वीमन कालेज में प्राचार्या के पद पर आसीन होकर मानोबी सिद्ध कर देती है कि यदि किन्नर समुदाय को परिवार और समाज का साथ मिले तो उनकी ऊर्जा एवं शक्ति को रचनात्मक कार्यों में लगाकर समाज में उनकी स्वीकार्यता को बढ़ाई जा सकती है। मानोबी की आत्मकथा को पढ़ने के बाद एक बात साफ हो जाती है कि किन्नर बच्चों को पारिवारिक, सामाजिक संरक्षण के साथ इनको उपेक्षित होने से बचाया जा सकता है तथा शिक्षित कर इन्हें आत्मनिर्भर भी बनाया जा सकता है। इस दिशा में साल२००८में तमिलनाडु में सिर्फ किन्नर समुदाय के लिए खासतौर से एक कल्याण बोर्ड गठित किया गया। सरकार ने उनके लिए बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध करवाईं , जैसे रिआयती आवास और व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र। इसके साथ ही उन्हें खास सरकारी

अस्पतालों में जेंडर अफर्मिंग सर्जरी नि :शुल्क करवाने की सुविधा दी गयी है। अगस्त २०१८में केरल देश का दूसरा राज्य बन गया जहां पर जेंडर अफर्मिंग सर्जरी के लिए किन्नर समुदाय के लोगों को दोलाख रुपये का सहयोग दिया जाता है। भारत में किन्नर समुदाय को सरकार से इसी तरह के समर्थन की जरूरत है ताकि उन्हें पर्याप्त तौर पर स्वास्थ्य सेवाएं मिल सकें और संदेहास्पद चिकित्सकीय पेशेवरों के हाथों उन्हें जैसे शोषण और उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है वे उससे बच सकें। कुल मिलाकर सरकार के सहयोग और परिवार के प्रयासों द्वारा इन्हें मुख्यधारा में शामिल किया जा सकताहै

मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी आत्मचरितका पात्र इस उपेक्षित समुदाय के संघर्षों का चित्रण मात्र ही नहीं करता है , अपितु इन संघर्षों से परे , एक विजयी सेनानी की भांति कई ऐसे आदर्श प्रस्तुत करता है, जो इनके अपने समुदाय के लिए एक आदर्श पदचिह्न बन ते है । यह एक किन्नर के परंपरागत जीवन शैली को नकारते हुए समाज की मुख्यधारा के लोगों की किन्नरों के प्रति हिकारत की भावना का प्रतिकार करता हुआ , संघर्षमय जीवन के साथ , अवनति से उन्नति की ओर अग्रसर होने की एक किन्नर गाथा है । लोगों का तिरस्कार सहते हुए भी अपने असीम धैर्य के साथ वह शिक्षा ग्रहण कर समाज में मात्र अपनी एक अलग पहचान ही नहीं बनाता है , वरन अपने समाज के लिए भी अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए अपनी संस्था के माध्यम से उनके उत्थान के लिए अनेकों अभियान चलाता है ।

इस जीवनचरित का पात्र लक्ष्मी अपने परिवार में एक पुत्र के रूप में जन्म लेता है । शनैः शनैः जब वह बड़ा होता है तब उसमें स्त्री सहज भावना का विकास होता है और वह स्त्रियों के समान व्यवहार करने लगता है । धीरे धीरे उसे यह ज्ञात होने लगता है कि वह न तो पूर्ण पुरुष है और न ही पूर्ण स्त्री । ऐसे में वह किन्नर समाज को स्वीकार कर लेता है । किन्नरों में यह मान्यता है कि एक बार जो भी इस समाज का हिस्सा बन जाता है , वह अपने परिवार से सारे रिश्ते तोड़ देता है या उनका परित्याग कर देता है । उनके समाज के गुरु अथवा रसुखदार गद्दियों के स्वामी हिजड़े इस मेल-जोल की अनुमति नहीं देते हैं | इसी भांति लक्ष्मी की गुरु भी उसे हिदायत देते हुए कहती हैं –

“घर मत रहो, यहाँ हम हिजड़ों के साथ रहो | हमें जो बातें नहीं करनी चाहिए, वो बातें वहाँ घर में तुम्हें करनी पड़ती हैं | .....हम ना स्त्री हैं, ना पुरुष .....स्त्री पुरुषों के समाज के नहीं हैं हम | क्यों रहना है फिर उनके साथ ? “

लक्ष्मी इसका एक अपवाद है। वह इस मान्यता का प्रतिकार करते हुए अपने परिवार का परित्याग नहीं करती है। अपने परिवार में आती जाती रहती है तथा पहले के समान सहज सम्बन्ध बनाये रखती है। लक्ष्मी का परिवार भी उसे उसी सहज भाव से स्वीकार करता है। जहाँ हमारे समाज में एक उभयलिंगी के पैदा होते ही उसका परित्याग कर दिया जाय है, वहीं लक्ष्मी और उसके परिवार की एक दूसरे के प्रति स्वीकार्यता एक नया उदाहरण प्रस्तुत करती है। उसके पिता कहते हैं –

"अपने ही बेटे को मैं घर से बाहर क्यूँ निकालूं ?मैं बाप हूँ उसका , मुझ पर जिम्मेदारी है उसकी / और ऐसा किसी के भी घर में हो सकता है / ऐसे लड़कों को घर से बाहर निकालकर क्या मिलेगा ? उनके सामने तो हम फिर भीख मांगने के अलावा और कोई रास्ता ही नहीं छोड़ते हैं / " शिक्षा किसी भी व्यक्ति या जिस समाज में वह रहता है , उस समाज की उन्नति के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण तत्त्व है। उभयलिंगियों के प्रति समाज की अस्पृश्यता और तिरस्कार की भावना उनके विकास में अवरोध का कारण बनती है। न ही कोई स्कूल उन्हें दाखिला देना चाहता है, न ही लोग उन्हें अपने बच्चों के साथ पढ़ने देना चाहते हैं। और यही कारण है कि अकुशल और अशिक्षित किन्नर भिक्षावृत्ति को अपना पेशा बना लेते हैं। लक्ष्मी भी अपने समाज के पिछड़ेपन का मूल कारण शिक्षा का अभाव ही मानती हैं। लक्ष्मी स्वयं पढ़ी लिखी हैं तथा उसी के अनुरूप वह अपने किन्नर भाइयों के लिए शिक्षा को महत्वपूर्ण मानती हैं। वह कहती हैं –***"मुझे प्रोग्रेसिव् हिजड़ा होना है ...और सिर्फ मैं ही नहीं अपनी पूरी कम्युनिटी को मुझे प्रोग्रेसिव बनाना है .....।"***

कोई भी उभयलिंगी जब अपने परिवार को छोड़कर किन्नर समाज का हिस्सा बनता है तब उसे अपने गुरु द्वारा बनाये गए कई कायदे कानून का कट्टरता से पालन करना पड़ता है, जैसे बधाई मांगना , नाचना गाना आदि। किन्तु लक्ष्मी अपने समाज के इन सभी नियमों का विरोध करती है। वह इस प्रकार से भिक्षावृत्ति में लिप्त होने की बजाय एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में कार्य करती है। वह सदैव इस प्रयास में रहती है कि उसके समाज में जो भी अनैतिक मान्यताएं हैं , उसका त्याग किया जाये। इस प्रकार लक्ष्मी अपने समाज और समूह के अनेकों नियमों को चुनौती देकर उनमें परिवर्तन का निरंतर प्रयास करती है।

लक्ष्मी अपने समाज के हित के लिए कई कदम उठाती है और इसी कारण लक्ष्मी और उसके गुरु के बीच मनमुटाव तक पैदा हो जाता है। लेकिन लक्ष्मी अपने गुरु के उन सभी आदेशों को ठुकराती है जो उसके या उसके समाज की प्रगति के आड़े आती हो | ऐसे ही एक बार जब लक्ष्मी को एड्स की स्थिति के विषय में चर्चा हेतु एक मीटिंग में आमंत्रित किया जाता है तब उसकी गुरु ऐसे किसी भी समारोह में शामिल होने का विरोध करती हुई कहती

हैं कि क्यों जाना चाहिए वहां , क्या जरूररत है इतना सामने आने की |किन्तु लक्ष्मी का मानना था कि वे लोग जितना समाज से हिले मिलेंगे उतना ही समाज भी उन्हें जानने पहचानने लगेगा | लक्ष्मी अपने गुरु लता के मना करने पर भी अपने समाज के हित के लिए उस मीटिंग में शामिल होती है | इस तरह वह किन्नरों को समाज से अलग रहने के नियम का विरोध करती है | हमारे समाज में किन्नरों को देखने का नजरिया बेहद अमानवीय रहा है | ऐसा लगता है मानो किन्नर होना बहुत बड़ा अभिशाप हो | वे इन्सान न होकर कोई जानवर हों | इसके लिए लक्ष्मी अपने समाज को भी कुछ हद तक जिम्मेदार मानते हुए कहती है – **'इन हिजड़ों से मैं बार-बार कहती हूँ , समाज का हमें देखने का जो नजरिया है, उसके लिए हम भी जिम्मेदार हैं | समाज में घुल-मिल जाओ, उनसे बात करो | फिर देखो, ये नजरिया बदलता है या नहीं**

लक्ष्मी एक सुशिक्षित और आत्मनिर्भर इन्सान है | अपने और अपने समुदाय के हित के लिए उसे लीक से हटकर चलने में जरा भी संकोच नहीं होता | वह किसी की भी परवाह नहीं करती | जब उसने हिजड़ा बनने की बात अपने दोस्तों से बताई तो बहुत से मित्रों ने उससे बात करना ही छोड़ दिया | इस विषय में उसका मानना है कि –**"लीक छोड़कर चलने पर इससे अलग और क्या हो सकता था ? मेरे दोस्त भी मुझे समझ नहीं सकते , यह देखकर मुझे बहुत बुरा लगा , पर मैं निराश नहीं हुई । चुनी हुई राह से पलट जाऊँ, ऐसा तो मुझे बिलकुल भी नहीं लगा ।** "

लक्ष्मी अपने कम्युनिटी के हित के लिए बिना डरे और बिना किसी के साथ के ही लड़ना आरम्भ करती है | जहाँ कहीं भी उसे हिजड़ों के हित के लिए खड़ा होना पड़ा , वहाँ वह अडिग रही |हिजड़ा समुदाय में अक्सर बहुत से हिजड़े भीख मांगकर खाने, बधाई लेने के साथ ही काम के आभाव में देह व्यापार में लिप्त हो जाते हैं जिसके कारण वे बहुत सी बीमारिओं से घिर जाते हैं | एड्स जैसी गंभीर बीमारी भी उन्हें हो जाती है | ऐसे में एक हिजड़ा होने के नाते उनके स्वास्थ्य की परवाह कोई नहीं करता | ऐसे में लक्ष्मी और उसके कई साथी मिलकर **'दाई वेलफेयर सोसाइटी'** के छत्र तले काम शुरू करते हैं जो हिजड़ों द्वारा हिजड़ों के लिए शुरू की गयी संस्था है | किन्तु संस्था के कुछ कामों का विरोध स्वयं हिजड़ा समुदाय के मुखिया करने लगते हैं | फिर भी लक्ष्मी इस संस्था एवं उसके प्रयासों को जारी रखती है | वह कहती है –**"बस्ती के हिजड़ों को अच्छा लगता था | उनके स्वास्थ्य के बारे में , उनकी जिंदगी के बारे में कोई फिक्र कर रहा है , यही उनके लिए काफी बड़ी बात थी | पर**

हिजड़ा कम्युनिटी के मुखिया , नायकों का इसको लेकर विरोध था | ....पर खुद काम करने वाले हिजड़े अब हमें बहुत अच्छा रिस्पांस देने लगे थे |"

लक्ष्मी 'दाई वेलफेयर सोसाइटी' की पहली अध्यक्षा बनी | उसकी संस्था इस समुदाय के लिए बहुत से काम करती थी | उनकी समस्यों और उनकी पीड़ाओं को समाज के सामने रखती थी | लक्ष्मी कहती हैं –**"इस सामाजिक काम के क्षेत्र में सभी हमसे आदर के साथ पेश आते थे । यहाँ दिल्लगी नहीं थी, छेड़खानी नहीं थी , कोई हमें नजरअंदाज नहीं करता था , हम इंसान थे और इंसानों को इंसानों के साथ ऐसे ही पेश आना चाहिए ।"**
लक्ष्मी का मानना है जो सम्मान उसे मिल रहा था , वही सम्मान उसके जैसे अन्य लोगों को भी मिलना चाहिए | इसी कारण वे अपनी संस्था के कार्यों को अनेक विरोध के बावजूद जारी रखती है | उसके अपने समुदाय के लोगों द्वारा ही संस्था के कुछ कार्यों का विरोध किया जाता था | तर्क यह था की एक हिजड़े को यह कार्य नहीं करना चाहिए | परन्तु लक्ष्मी निजी तौर पर मानती हैं की किसी काम का किया जाना इस बात पर आश्रित नहीं होना चाहिए की उसे एक स्त्री कर रही है , एक पुरूष कर रहा है या एक हिजड़ा | वह कहती हैं – **"आप स्त्री हो ,पुरुष हो, या हिजड़े हो इससे कोई काम तय होगा, तो ऐसी सोच से कैसे चलेगा ? "**

हिजड़ों द्वारा स्वयं के स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के निदान एवं उसके प्रति जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से की गयी इस संस्था की स्थापना , उनके समुदाय में नए परिवर्तन की स्वीकार्यता का आरम्भ था | इसी क्रम में लक्ष्मी अपने बूते **'अस्तित्व'** नामक एक अन्य संस्था की शुरुआत करती है जिसमे हिजड़ों की समस्याओं को सुनने और सुलझाने के लिए बहुत ही बड़े स्तर पर काम किया जाता है | इसी के साथ लक्ष्मी बताती है कि किस प्रकार समाज का कुछ तबका उनके प्रति संवेदनहीन और अमानवीय व्यवहार करता है | उन्हें बस छेड़े जाने और शोषित किये जाने वाला जीव समझता है | वह उस प्रसंग का जिक्र करती हैं जब वह डांस सिखाने के लिए जाती हैं तब कई लड़के उनके कमरे में घुस आते हैं और उनके साथ जबरजस्ती करने का प्रयास करते हैं | लेकिन वह किसी प्रकार वहाँ से भाग निकलती है | यह वाकया उसके जीवन को एक नयी दिशा प्रदान करता है | प्रायः ऐसे हादसे लोगों को निराशा की गर्त में धकेल देते हैं और इंसान इसे अपनी नियति मान निरंतर शोषित होता रहता है | परन्तु यह वाकया लक्ष्मी को इस पुरुष प्रधान समाज से लड़ने की

ताकत देता है और वह इसके प्रतिकार का निश्चय करती है | वह सोचती है –**" मुझे प्रतिकार करना सीखना होगा | मैंने मन-ही-मन- लड़ने की तैयारी की |"**

लक्ष्मी स्वयं की ही भांति अपने अन्य लोगों को भी समाज द्वारा किये जाने वाले दुर्व्यहार का प्रतिकार करने के लिए प्रेरित करती है |लक्ष्मी केवल अपने ही विकास, अपनी ही उन्नति की चिंता नहीं करती अपितु अपने संपूर्ण समाज के लिए संघर्ष करती है , मात्र स्वयं ही दुनिया की नज़रों में ऊँचा उठने की आशा नहीं रखती बल्कि अपने जैसे सभी लोगों को वही मान-सम्मान और ऊंचाई दिलाने की चाह रखती है | जहाँ कहीं भी मौका मिलता है , अपने साथ अपने साथियों को भी ले जाती है ताकि उनकी कला को सबके सामने लाया जा सके | उसकी मेहनत का ही परिणाम है की वह हिजड़ों को अपनी कला के द्वारा विदेश तक की यात्रा करवाती है | लक्ष्मी अपने जैसों को स्वयं ही अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए प्रोत्साहित करती है|

मेरी सरकार से अपील है कि किन्नर बस्तिओं में एन.जी.ओ के मार्फत जाकर इनकी शिक्षा दीक्षा के लिए प्रेरित कर ना चाहिए| जिस प्रकार महर्षि धोंडो केशव कर्वे जी ने महिलाशिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई इसी तहत एस.एन.डी.टी.महिला विश्वविद्यालय की स्थापना की | आज आजादी के अमृतमहोत्सव तक देश विभिन्न प्रांगणों में आमूलाग्र बदल कर विकसनशील भारत से विकसित भारत की ओर बढ़ रहा है | उसी प्रकार शिक्षा की मूल व्यवस्था यदि हिजड़े समाज के लिए किया जाये तो उसे आसानी से मुख्यधारा से जोड़ा जा सकता है| भारत देश की भारतीयता को समृद्ध करने में इनके कार्य-कौशल का उपयोग किया जा सकता है| लक्ष्मीनारायण नारायण त्रिपाठी जी अपने इस्लामाबाद में दिए एक साक्षात्कार में कहती हैं-मैं कोई भी काम के पीछे पड़ जाती हूँ तो बिना किये दम नहीं लेती |ऑफिस में मिलती हूँ|घर आकर उन्हें बार-बार फोन करती हूँ | मुझे कौन सा बच्चों के लिए दूध बनाना है या पति के लिए टिफिन| सचमुच शिक्षा जीवन की दिशा बदलने के लिए महत्वपूर्ण साधन है| बशर्ते इसकी सुविधा जन-स्तर पर उपलब्ध करायी जाए | नाशिक में मैं मेरे स्तर पर एक छोटा प्रयास स्वयं एजुकेशन ट्रस्ट के माध्यम से कर रही हूँ| जो मात्र दो साल पुरानी संस्था है |

सन्दर्भ:
१)मैं हिजड़ा ....मैं लक्ष्मी !::लेखक:लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी: शब्दांकन :वैशाली रोड़े: प्रकाशक :वाणी प्रकाशन :प्रथम संस्करण २०१५ .

२) पुरूष तन में फँसा मेरा नारी मन::लेखक मानोबी बंदोपाध्याय :: शब्दांकन झिमली पाण्डेय ::प्रकाशक राजपाल एंड सन्स प्रकाशन १५९०,मदरसा रोड,कश्मीरी गेट,दिल्ली . प्रथम संस्करण २०१७ .